कहानी 35 किलो गेहूं की

MONDAY, 28 OCTOBER 2013 10:21

Share

सांधरी गांव में 110 गरीब सहरिया परिवार निवास करते हैं. इन्हें हर महीने मिलने वाले निःशुल्क गेहूं को पिसाने के लिए 18 किलोमीटर दूर देवरी गांव जाना पडता है. देवरी आने जाने में 30 रुपए प्रति सवारी किराया है. किराए के रूप में 30 रुपए गेहूं के कट्टे के ले लेते हैं. पिसाई के 35 रुपए. यानी लगभग सौ रुपए खर्च हो जाते हैं...

बाबूलाल नागा

राजस्थान के आदिवासी बारां जिले की किशनगंज व शाहाबाद तहसील में करीब 20 हजार सहरिया परिवार रहते हैं. इन्हें सरकार द्वारा प्रतिमाह प्रति परिवार 35 किलो गेहूं निःशुल्क उपलब्ध कराए जाते हैं. इन दोनों तहसीलों में सहरियाओं को प्रतिमाह करीब सात हजार क्विंटल गेहूं का वितरण होता है. गौरतलब है कि पूर्व में भूख से हुई मौतों को लेकर इस क्षेत्र के सुर्खियों में आने के बाद सरकार की ओर से इन्हें निःशुल्क गेहूं उपलब्ध कराना शुरू किया गया था.

फाइल फोटो

सहरियाओं को गेहूं निःशुल्क उपलब्ध कराने की घोषणा के साथ कहा गया इस योजना को प्रारंभ किए जाने से सहरिया परिवारों को भरपेट भोजन उपलब्ध हो सकेगा, मगर हकीकत कुछ ओर ही बयां करती है. निःशुल्क गेहूं को प्राप्त करने के लिए सहरियाओं को खासी मशक्कत करनी पड़ रही है. मशक्कत के बावजूद गेहूं के लिए भी इन्हें ताकना ही पड़ रहा है. क्षेत्र के कई गांवों में गेहूं लेने भी पैदल जाना पड़ता है. 35 किलो निःशुल्क गेहूं को प्राप्त करने के लिए इन गरीबों को लगभग सौ रुपए खर्च करने पड़ रहे हैं.

शाहाबाद तहसील के चोराखाड़ी गांव के केदार सहरिया के मुताबिक 35 किलो निःशुल्क गेहूं बीलखेड़ा पंचायत मुख्यालय जाकर लाना पड़ता है. चोराखाड़ी से बीलखेड़ा की दूरी 5 किलोमीटर है. यह दूरी पैदल ही चलकर पूरी करते हैं. गेहूं को पिसाने चोराखाड़ी से देवरी जाते हैं. देवरी जाने का करीब 40 रुपए किराया लगता है. 20 रुपए गेहूं के कट्टे के लग जाते हैं, तो 35 रुपए पिसाई के. इस तरह 35 किलो गेहूं को प्राप्त करने में लगभग 100 रुपए खर्च हो जाते हैं.

सूंडा गांव के सहरिया कहते हैं कि उन्हें 35 किलो गेहूं लेने 5 किलोमीटर दूर खंडेला जाना पड़ता है. साइकिल या फिर किराए से टैक्टर ट्राॅली करके लेकर जाते हैं. गेहूं पिसाई के लिए 2 किलोमीटर दूर गणेशपुरा गांव जाते हैं. हरिनगर से बीलखेड़ा डांग करीब 15 किलोमीटर दूर है. हरिनगर के सहरियाओं को ट्रेक्टर किराए पर करके बीलखेड़ा से निः शुल्क गेहूं लेकर आना पड़ता है. बीलखेड़ा दूर होने से गेहूं पिसाई के लिए मध्य प्रदेश के गलथूनी गांव जाते हैं.

हरीनगर से यह गांव 6 किलोमीटर दूर ही है. सांधरी गांव में 110 गरीब सहरिया परिवार निवास करते हैं. ये हर महीने मिलने वाले निःशुल्क गेहूं को पिसाने के लिए 18 किलोमीटर दूर देवरी गांव जाते हैं. देवरी आने जाने में 30 रुपए प्रति सवारी किराया है. किराए के रूप में 30 रुपए गेहूं के कट्टे के ले लेते हैं. पिसाई के 35 रुपए. यानी लगभग सौ रुपए खर्च हो जाते हैं. सनवाड़ा ग्राम पंचायत के मडी सांभर सिंगा गांव के वाशिदें करीब 3 किलोमीटर पैदल चलकर सांधरी गांव से गेहूं लेकर आते हैं.

सरकार के निःशुल्क गेहूं वितरण के दावों की पोल इसी से खुल जाती है कि इस क्षेत्र के सहरियाओं को कैसे यह गेहूं पाने के लिए जूझना पड़ रहा है. क्षेत्र की कई ग्राम पंचायतों में गेहूं का वितरण एक महीने की देरी से किया जा रहा है. इकलेरा डांडा में जून माह में अप्रैल महीने का राशन दिया गया. कई परिवारों को बाजार से महंगी दर पर गेहूं खरीदना पड़ रहा है. हाल ही खबर आई कि किशनगंज ब्लॉक के खांखरा ग्राम पंचायत के जगदीशपुरा गांव के सहरिया परिवारों को पिछले पांच माह से राशन सामग्री ही नहीं मिली. इन परिवारों को फरवरी से जुलाई 2013 तक का राशन का इंतजार है.

बाबूलाल नागा विविधा फीचर्स के संपादक हैं.

2 Like | 0 | 0 Tweet | Share

Add comment

Name (required)

E-mail

Website

Notify me of follow-up comments

Send

JComments

Copyright © 2013 Janjwar. All Rights Reserved.
Designed and Developed by Webhut Anuj Mathur +91.9201444499 and Hosted by RDestWeb

congress controversy delhi hindi hindi news india janjwar janjwar.com jharkhand muslim narendra modi pakistan sonia gandhi uttar pradesh www.janjwar.com